विषय - संस्कृत
प्रश्नपत्र - तृतीय

प्र० - शुकनासोपदेश के अनुसार गुरूपदेश का महत्व/ उपदेश का रहस्य लिखें।

उ० → कादम्बरी के कथा-प्रसंग में आये हुए शुकनास-उपदेश का महत्व मानव जीवन के लिए कितना रहस्यपूर्ण है, इस विषय में जितना कहा जाय थोड़ा है। प्रस्तुत 'शुकनासोपदेश' मम्मट के शब्दों में "कान्तासम्मिततय-उपदेशयुजे" के रहस्य का जीवन्त प्रतीक है। शुकनास के इस उपदेश के पात्र है- राजकुमार चन्द्रापीड़। राजकुमार के तत्कालीन स्वरूप का अध्ययन करने पर हमें गुरूपदेश का महत्व स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है यथा -

1) चन्द्रापीड़ प्रत्येक युवावस्था प्राप्त मानव के प्रतीक है जिसके माध्यम से महामन्त्री ने समस्त युवक समुदाय को उपदेश देकर समुचित मार्ग का निर्देश किया है।

2) वे गुरूकुल में विधिवत् शिक्षा प्राप्त कर घर लौटने वाले स्नातक के प्रतीक है जो अपने जीवन के सैद्धान्तिक पक्ष में उपार्जित ज्ञान का अपने जीवन के व्यवहारिक पक्ष में समुचित उपयोग की दिशा प्राप्त करने के लिए दीक्षान्त वचन की अपेक्षा रखता है।

3) वे जिम्मेदारी के पद पर प्रतिष्ठित होने वाले प्रत्येक नवीन शासक के प्रतीक है जिनको उत्तरदायित्वपूर्ण सक्रियता पर जनता के भाग्य का फैसला अवलम्बित रहता है।

4) उपदेश की विषय कोटि में अपतित लक्ष्मी कामिनी काञ्चन और काया का प्रतीक है। दूसरे शब्दों में स्त्री की इच्छा, धन की इच्छा और पुत्र की इच्छा रूप एषणात्रय का प्रतीक है।

Scanned with CamScanner

5) लक्ष्मी का मद मानव के स्वाभाविक अहंकार का प्रतीक है। लक्ष्मी और उसके मद का मार्मिक रहस्योद्घाटन कर कवि ने मानव को उससे बचने का मार्ग प्रदर्शित कर उसका महान उपकार किया है, क्योंकि एषणात्रय ही दुःख का मूलकारण है।

6) कवि ने उपदेश के माध्यम से इस रहस्य का उद्घाटन किया है कि केवल शास्त्रों के अध्ययन मात्र से ही किसी मनुष्य में उचित-अनुचित कार्य-विधान की विवेकशक्ति नहीं आ जाती। "न धर्मशास्त्रं पठतीति कारणम्" इस मान्यता को स्वीकार करते हुए मानव-स्वभाव के संस्कार और बुद्धि-परिपाक के लिए शास्त्र अध्ययन के लिए अतिरिक्त गुरूपदेश, सज्जनों की संगति और शिष्टजनों का अनुकरण भी आवश्यक है।

7) नूतन शिक्षा प्राप्त युवक राजकुमार चन्द्रापीड़ अपने व्यावहारिक जीवन में उतर कर अभिनव राज्यभार का उत्तरदायित्व ग्रहण करने जा रहे हैं। अतएव महाकवि ने उपदेश के माध्यम से उनके कर्तव्य-मार्ग का निर्देश करते हुए इस रहस्य का संकेत किया है कि मानवजीवन के दो पहलू हैं- एक सैद्धान्तिक और दूसरा व्यावहारिक। सैद्धान्तिक पहलू मानवजीवन का प्रथम चरण है, जिसमें वह गुरूओं के सानिध्य में ज्ञानार्जन करता है। व्यवहारिक पहलू जीवन का द्वितीय चरण है, जिसमें दाम्पत्य जीवन के मधुर बन्धन में बाँधकर मानव अपने उपार्जित ज्ञान को व्यवहार का रूप देता है। ज्ञान और व्यवहार का मञ्जुल समन्वय ही मानव-जीवन की पूर्णता है। "ज्ञानं भारः क्रियां विना" को ध्यान में रखकर प्रत्येक मानव का यह पावन कर्तव्य हो

Scanned with CamScanner

जाता है कि वह अपने जीवन के सैद्धान्तिक पक्ष में उपार्जित ज्ञान का व्यवहारिक जीवन में समुचित उपयोग कर सके। इसके लिए उसे दीक्षा-दीप की परमावश्यकता है जिसकी अखण्ड ज्योति से उसका जीवन पथ सर्वदा आलोकित रहे और वह पथभ्रष्ट होने से अपने को बचा सके।

8) लक्ष्मी मद से स्वभावतः निरंकुश राजवर्ग और उसके पार्श्ववर्ती धूर्त पुरुषों की स्वार्थपरता का स्पष्ट रूप से भंडाफोड़ करके उनके दुष्परिणामों से बचने का संकेत करते हुए राजा और प्रजा दोनों को उनसे सावधान रहने की चेतावनी दी गई है। दोष का वास्तविक प्रदर्शन होने पर ही उससे बचने का उपाय किया जा सकता है। मानव-स्वभाव के गुण-दोषों का विवेचन इसलिए आवश्यक है कि वह गुणों का संग्रह और दोषों का परित्याग कर सके।

9) विष्णुप्रिया लक्ष्मी को मायाविनी बताकर उसके स्वाभाविक चाञ्चल्य को और विरोधी स्वरूप का चित्रण कटु शब्दों में किया गया है। इसका उद्देश्य मानव को लक्ष्मी के इन्द्रजाल में न फँसने देना है, लक्ष्मी की निन्दा का उद्देश्य मानव की तमः प्रधान आसुरी प्रवृत्ति का निराकरण कराकर सत्वप्रधान दैवी गुणों का सन्निवेश करना प्रतीत होता है।

उपर्युक्त विवेचन से यह तो ज्ञात हो जाता है कि महामन्त्री ने धन की घोर निन्दा की है तथा विद्या को धन की अपेक्षा अधिक महत्त्व दिया है। लक्ष्मी की इस छीछालेदार से केवल धन को ही अधिक महत्व देकर उसी की उपासना में अपने वास्तविक लक्ष्य को भुला देने वाले जन-समुदाय पर कवि का एक सटीक मार्मिक व्यंग्य है। पैसे के लिए हाय-हाय मचाने वाले आज के युग पर शुकनास का यह उपदेश एक करारी चपत है।

Scanned with CamScanner